संख्या– 204/VI/2005–3(6)2004 टी0सी0

प्रेषक,

ए0केघोष,
अपर सचिव
उत्तरांचल शासन ।

सेवामें,

निदेशक,पर्यटन
उत्तरांचल, देहरादून ।

पर्यटन अनुभाग:

देहरादून दिनांक 05 मार्च, 2006

विषयः जिला योजना 2004–2005 के अधीन पर्यटक स्थलों का सौन्दर्यीकरण तथा सुविधाओं हेतु जिला योजनान्तर्गत धनावंटन के सम्बंध में ।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या–453/2–6–215/2004 दिनांक 28 दिसम्बर,2004 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय जिला योजना 2004–2005 के अधीन पर्यटक स्थलों का सौन्दर्यीकरण तथा सुविधाओं हेतु रू0 10.31 लाख (रूपये दस लाख इक्तीस हजार मात्र) के आगणनों के सापेक्ष टी0ए0सी0 द्वारा परीक्षोपरान्त संस्तुत रूपये 8.23 लाख(रूपये आठ लाख तेइस हजार मात्र) की लागत के आगणनों पर प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान करते हुये चालू वित्तीय वर्ष 2004–2005 में रू0 8.23 लाख(रूपये आठ लाख तेइस हजार मात्र) की धनराशि को डिपाजिट के रूप में आहरित कर व्यय करने की स्वीकृति सहर्ष प्रदान करते है:–

क्र0स0	योजना का नाम	योजना का मूल आगणन (रू0 लाख में)	टी0ए0सी0 द्वारा संस्तुत /स्वीकृत की जा रही धनराशि (लाख रू0 में)	निर्माण इकाई
	जनपद–उत्तरकाशी			
1–	बगोढ़ी में भडेश्वर मंदिर का सौन्दर्यीकरण	3.69	2.92	खण्ड विकास अधिकारी चिन्यालीसौड
2–	कुटेटी देवी मंदिर का सौन्दर्यीकरण	1.67	1.30	ग्रा0अभि0सेवा उ0काशी
3–	ग्राम पोरा विकास खण्ड पुरोला में इको पार्क का निर्माण	1.99	1.58	ग्रा0अभि0सेवा उ0काशी
4–	बनकोट में हूण देवता मंदिर तक ट्रैक मार्ग का सौन्दर्यीकरण	1.46	1.20	ग्रा0अभि0सेवा उ0काशी
5–	भैंगवाल गांव में भैरव देवता मंदिर तक ट्रैक निर्माण/सौन्दर्यीकरण	1.50	1.23	ग्रा0अभि0सेवा उ0काशी
	योगः–	10.31	8.23	ग्रा0अभि0सेवा उ0काशी

2– उक्त स्वीकृत धनराशि इस प्रतिबन्ध के साथ स्वीकृत की जाती है कि मितव्ययी मदों में आवंटित सीमा तक ही व्यय सीमित रखा जाय। यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि धनराशि का आवंटन किसी ऐसे व्यय को करने का अधिकार नहीं देता जिसे व्यय करने के लिये बजट मैनुअल या वित्तीय हस्त पुस्तिका के नियमों या अन्य आदेशों के अधीन व्यय करने के पूर्व सक्षम अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है और ऐसा व्यय सम्बन्धित की स्वीकृति प्राप्त कर के ही किया जाना चाहिये। व्यय में मितव्ययता नितान्त आवश्यक है। व्यय करते समय मितव्ययता के सम्बन्ध में समय–समय पर जारी किये गये शासनादेशों में निहित निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जाय।

3– आगणन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत /अनुमोदित दरों को जो दरें शिड्यूल आफ रेट में स्वीकृत नहीं है अथवा बाजार भाव से ली गई है की स्वीकृति नियमानुसार कम से कम अधीक्षण अभियन्ता स्तर के अधिकारी से स्वीकृत करालें ।

4– कार्य कराने से पूर्व विस्तृत आगणन/मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, बिना प्राविधिक स्वीकृति के कार्य प्रारम्भ न किया जाय ।

5– कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितना कि स्वीकृत है, स्वीकृत मानं से अधिक व्यय कदापि न किया जाय ।

6– उक्त स्वीकृति इस शर्त के अधीन दी जा रही है कि इनका कार्यपूर्ण होने के पश्चात रख–रखाव की व्यवस्था सम्बंधित नगर पंचायत/ग्राम पंचायत द्वारा किया जायेगा और कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उनसे इसकी लिखित वचनबद्धता प्राप्त कर ली जायेगी ।

7– एक मुश्त प्राविधान को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगणन गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा ।

8– उक्त योजना पर धनराशि आहरित करने के पूर्व यह सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि उक्त योजनायें जिला योजना एवं अनुश्रवण समिति द्वारा अनुमोदित हों और जनपद हेतु आवंटित प्लान परिव्यय के अनुरूप ही हो, अथवा सम्बंधित आहरण एवं वितरण अधिकारी पूर्ण रूप से उत्तरदायी माने जायेंगें ।

9– यहाँ यह भी स्पष्ट किया जाता है कि इन योजनाओं हेतु पूर्व में धनराशि स्वीकृति न हुआ हो।इस हेतु सम्बंधित आहरण वितरण अधिकारी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगा ।

10–योजना/कार्य पूर्ण होने के उपरान्त सम्बंधित निर्माण एजेन्सी उक्त कार्य स्थल पर इस आशय का एक साइन बोर्ड स्थापित करेगा कि उक्त कार्य पर्यटन विभाग द्वारा निर्मित किया गया है । कार्य पूर्ण होने के उपरान्त सम्बंधित जिला पर्यटन विकास अधिकारी कार्य का भौतिक निरीक्षण कर कार्य पूर्ण होने की सूचना यथा समय शासन को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेगें ।

11–कार्य कराने से पूर्व समस्त औपचारिकताए तकनीकी दृष्टि के मध्य नजर रखते एंव लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्य को सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें ।

12–कार्य कराने से पूर्व स्थल का भली–भाति निरीक्षण उच्च अधिकारियों एंव भुगर्ववेत्ता के साथ अवश्य करा लें। निरीक्षण के पश्चात् स्थल आवश्यकतानुसार निर्देशों तथा निरीक्षण टिप्पणी के अनुरूप कार्य किया जायें ।

13–आगणन में जिन मदों हेतु जो राशि स्वीकृति की गयी है, उसी मद पर व्यय किया जाय, एक मद का दूसरी मद में व्यय कदापि न किया जाय ।

14–निर्माण सामग्री का उपयोग में लाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से टैस्टिंग करा ली जाय, तथा उपयुक्त पायी जाने वाली सामग्री को प्रयोग में लाया जाय ।

15–कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता हेतु सम्बन्धित निर्माण एजेन्सी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगी।

16–जिन योजनाओं में दूसरी किस्त दी जानी है उनमें अब स्वीकृत धनराशि के पूर्ण उपयोग एवं कार्य की वित्तीय/भौतिक प्रगति का विवरण एवं उपयोगिता प्रमाण–पत्र दिये जाने के बाद ही दूसरी किस्त निर्गत की जायेगी ।

17–उपरोक्त व्यय वर्तमान वित्तीय वर्ष 2004–2005 के अनुदान संख्या–26 के अन्तर्गत लेखाशीर्षक –5452–पर्यटन पर पूँजीगत परिव्यय–80–सामान्य–आयोजनागत–104–सम्वर्धन तथा प्रचार–91–जिला योजना 07–पर्यटक स्थलों का सौन्दर्यीकरण तथा सुविधायें– 42– अन्य व्यय के मामें डाला जायेगा।

18–उपरोक्त आदेश वित्त विभाग के अशा0 सं0–545/वित्त अनु0–3/2005, दिनांक 25 फरवरी, 2005 में प्राप्त उनकी सहमति के आधार पर जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय

(ए0केघोष)
अपर सचिव

पृष्ठांकन संख्या– /VI-1/2005–3(6)2004 टी0सी0 तद्दिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1– महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी, उत्तरांचल, देहरादून।
2– वरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।
3– जिलाधिकारी, उत्तरकाशी ।
4– जिला पर्यटन विकास अधिकारी उत्तरकाशी।
5– वित्त अनुभाग–3, उत्तरांचल शासन।
6– श्री एल0एम0पन्त, अपर सचिव वित्त ।
7– अपर सचिव, नियोजन विभाग, उत्तरांचल शासन।
8– एन0आई0सी0, उत्तरांचल सचिवालय परिसर।
9– गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

13/05

(ए0केघोष)
अपर सचिव